पाठ 18

ब्रज-माधुरी

–कविवर पद्माकर/हरिश्चंद्र/बेनी

सारांश—इस पाठ में ब्रजभाषा के तीन पद संकलित हैं। इनके रचयिता कवि क्रमशः पद्माकर एवं भारतेन्दु हरिश्चन्द्र बेनी हैं। प्रथम पद में बालक कृष्ण के अपने बाल-मित्रों के साथ दही चुराने की घटना का सुन्दर चित्रण है। दूसरे पद में कमल-कोष में बन्द भौंरे के माध्यम से जीवन की नश्वरता को बताया गया है। तीसरे पद में विरहिणी गोपी अपने प्रियतम कृष्ण से उसे कंठ से लगा लेने का अनुनय कर रही है।

शब्दार्थ—**चितै-चितै** = टोह या आहट लेते हुए **चौकि-चौकि** = चकित हो-होकर। **त्यौं ही** = वैसे ही। **खटकत** = खड़कने की आवाज। **पात** = पत्ते। **भाजन** = भागना। **गत** = शरीर। **सेष** = शेष नाग। **महेश** = शंकर। **सुरेश** = इन्द्र। **सिहात** = ईर्ष्या करते हैं। **पाँय** = पैर। **भीत** = दीवाल। **मीत** = मित्र। **छींका** = शिकव, रस्सी का लटकता हुआ जालदार फँदा जिस पर बिल्ली आदि के डर से दूध या खाने की दूसरी वस्तुएँ रखते हैं सिकहर। **दधि** = दही। **पंकज कोस** = कमल के भीतर। **भृंग** = भौंरा। **यों** = इस प्रकार। **मनसूबा** = इरादा,

विचार। **दिवाकर** = सूर्य। **धाम** = स्थान, ठौर, अपना गृह या आश्रय स्थल। **पराग** = पुष्पराज। **अजूबा** = अद्‌भुत, अनोखा। **उरहानौ** = उलाहना, शिकायत। **भाग** = भाग्य। **कंठ** = गला। **तासों** = उसको।

पद्यांशों की व्याख्या

(1) चितै-चितै चारों ओर चौंकि-चौंकि परैं त्यों ही,
जहाँ-तहाँ जब-तब खटकत पात है।
भाजन सो चाहत, गँवार ग्वालिनी के कछु,
डरनि डराने से उठाने रोम गात हैं॥
कहैं 'पद्माकर' सुदेखि दसा मोहन की,
सेष हू, महेस हू, सुरेस हू, सिहात हैं।
एक पाँय भीत, एक पाँय मीत काँधे धरें,
एक हाथ छीकौ एक हाथ दधि खात हैं॥

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक "छत्तीसगढ़ भारती" के ब्रज-माधुरी नामक पाठ से लिया गया है। इसके कवि पद्माकर जी हैं।

प्रसंग—इस पद्यांश में कवि ने बालक कृष्ण द्वारा दही चुराने की घटना का सुन्दर चित्रण किया है।

व्याख्या—कृष्ण अपने बाल सखाओं के साथ किसी ग्वालिन के घर दही चुराने जाते हैं। वे बड़ी सतर्कता के साथ आगे बढ़ते हैं, किन्तु जब भी कहीं कोई पत्ता भी खड़कता है, चौंककर चारों ओर देखने लगते हैं। इसी बीच गाँव की एक ग्वालिन उन्हें किसी चीज का भय बताकर डरा देती है। इससे उनका पूरा शरीर रोमांचित हो उठता है और वे भाग जाना चाहते हैं।

कवि पद्माकर कहते हैं कृष्ण की यह दशा देखकर शेषनाग, शंकर एवं देवराज इन्द्र को उनसे ईर्ष्या होने लगती है। ग्वालिन के घर पहुँचकर सींके तक पहुँचने के लिए बाल-कृष्ण अपना एक पैर दीवार पर और दूसरा पैर अपने मित्र के कंधे पर रखते हैं। फिर वे एक हाथ से सींके को पकड़कर दूसरे हाथ से दही निकाल-निकालकर खाने लगते हैं।

(2) पंकज कोस में भृंग फस्यौ, करतौ अपने मन यों मनसूबा।
होइगो प्रात उएँगे दिवाकर, जाऊँगो धाम पराग लै खूबा॥
बेनी सो बीच ही और भई, नहिं काल को ध्यान न जान अजूबा।
आय गयंद चबाय लियौ, रहिगो मन-ही-मन यों मनसूबा॥

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'छत्तीसगढ़ भारती' के 'ब्रज-माधुरी' नामक पाठ से लिया गया है। इसके कवि बेनीजी हैं।

प्रसंग—इस पद्यांश में कवि ने कमल कोश में फँसे भौंरे के माध्यम से जीवन की नश्वरता को बताया है।

व्याख्या—सूर्यास्त होने पर, कमल-दल के संकुचित हो जाने पर एक भौंरा उसके कोश में फँस गया। वह मन-ही-मन इस प्रकार सोचने लगा कि कल प्रातः जब सूर्योदय होगा और कमल पुनः विकसित हो जायेगा तो मैं बहुत-सा पराग लेकर अपने घर चला जाऊँगा, अर्थात् उड़ जाऊँगा। बेनी कवि कहते हैं कि इसी बीच एक और ही घटना घट गयी। इसमें कोई अचरज नहीं कि उस भौंरे को काल अर्थात् अपनी मृत्यु का ध्यान ही नहीं रहा। वहाँ एक हाथी आया और उसने उस कमल को चबा डाला, जिसमें वह भौंरा बन्द था। इस प्रकार उस भौंरे की इच्छा उसके मन में ही धरी रह गयी और वह काल के गाल में समा गया।

(3) सखी हम कहा करैं कित जायें।
बिनु देखे वह मोहिनी मूरति नैना नाहिं अघायँ।
बैठत उठत सयन सोवत निस चलत फिरत सब ठौर।
नैनन तें वह रूप रसीलो टरत न इक पल और।
सुमिरन वही ध्यान उनको ही मुख में उनको नाम।
दूजी और नाहिं गति मेरी बिनु मोहन घनश्याम।
सब ब्रज बरजौ परिजन खीझौ हमरे तो अति प्रान।
हरीचंद हम मगन-प्रेम-रस सूझत नाहिं न आन।।

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'छत्तीसगढ़ भारती' के 'ब्रज-माधुरी' नामक पाठ से लिया गया है। इसके कवि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हैं।

प्रसंग—इस पद्यांश में कवि ने सखी के मन की दुविधा तथा कृष्ण के प्रति प्रेमभाव का वर्णन किया है।

व्याख्या—नायिका अपनी सखी से मन की दुविधाओं का उल्लेख करती हुई कहती है कि— सखी मैं क्या करूँ, कहाँ जाउँ, कृष्ण के मोहिनी मूरत को देखे बिना मेरे नैन नहीं भरते हैं। बैठते-उठते, सोते-जागते, चलते-फिरते सब जगह उनका रूप देखने को तरसता है। एक पल के लिए भी नेत्र उसके ध्यान से हटता नही है। हर समय मन में कृष्ण का ही नाम है। कृष्ण के बिना मेरी दूसरी कोई गति नही है। सभी ब्रजवासी तथा परिवार के लोग मना करते है, खींझते हैं। कवि कहते हैं कि कृष्ण के प्रेम के अलावा उन्हें और कुछ नही सूझता है।

अभ्यास

❑ पाठ से—

प्रश्न 1. 'चितै-चितै चारों ओर' इस छंद में कौन बार-बार चौंककर इधर-उधर देख रहा है और क्यों ?

उत्तर—चितै-चितै चारों ओर इस छंद में बालक कृष्ण बार-बार चौंककर इधर उधर देख रहे हैं क्योंकि उसे पत्तों के खड़कने की आवाज सुनाई देती है।

प्रश्न 2. कमल में भौंरा कैसे बन्द हो गया ?

उत्तर—भौंरा कमल कोश में बैठकर पराग को खा रहा था, तभी सूर्यास्त हो गया और कमल के दल सिमट गये। इस प्रकार भौंरा कमल में बन्द हो गया।

प्रश्न 3. कमल कोष में बन्द भौंरा मन-ही-मन क्या सोच रहा था?

उत्तर—कमल में बन्द भौंरा मन-ही-मन सोच रहा था—कल प्रातः सूर्योदय होने पर जब कमल पुनः खिलेगा तब मैं बहुत-सा पराग लेकर अपने घर को चला जाऊँगा।

प्रश्न 4. भौंरे की इच्छाओं का अन्त कैसे हुआ ?

उत्तर—कमल में बन्द भौंरे को कमल सहित एक हाथी ने चबा लिया। इस प्रकार भौंरे के साथ ही उसकी इच्छाओं का अन्त हो गया।

प्रश्न 5. नैन अघाने का क्या आशय है ?

उत्तर—नैन अघाने का अर्थ आँखों की तृप्त होना।

प्रश्न 6. नायिका अपनी सखी से मन की किन दुविधाओं का उल्लेख करती है ?

उत्तर—नायिका अपनी सखी से मन की दुविधाओं का उल्लेख करती हुई कहती है कि—सखी मैं क्या करूँ कहा जाऊँ कृष्ण को देखे बिना मेरे नैन नहीं होते। बैठते, उठते जागते सब समय चलते-फिरते सब जगह उनका रूप देखने को तरसता है। हर समय मन में उनका मुख और नाम रहता है। घनश्याम के बिना मेरी दूसरी कोई गति नहीं।

प्रश्न 7. भाव स्पष्ट कीजिए—
सुमिरन वही ध्यान उनको ही मुख में उनको नाम।
दूजी और नाहिं गति मेरी बिनु मोहन घनश्याम।

उत्तर—भाव स्पष्ट—मेरे मन में मेरे ध्यान में सिर्फ कृष्ण का ही नाम है। कृष्ण के बिना मेरी दूसरी कोई गति नहीं है।

❑ पाठ से आगे–

प्रश्न 1. भौंरे के मन में ढेर सारी इच्छाएँ थी जो अगले पल में खत्म हो गई। हमारे मन में भी ढेर सारी इच्छाएँ जन्म लेती है पर वे पूर्ण नहीं हो पाती क्यों ? साथियों के साथ विचार कर लिखिए।

उत्तर–हमारे मन में भी अनेक इच्छाएँ होती है कभी–कभी परिस्थिति के कारण वह पूर्ण नहीं हो पाती है तो कभी हमारे लक्ष्य से भटकना भी बाधा उत्पन्न करती है। हम कभी अच्छे से प्रयास नहीं कर पाते इन सब कारणों से इच्छाएँ पूर्ण नहीं हो पाती।

प्रश्न 2. बाल श्रीकृष्ण की लीलाओं को आपने अपने बड़े-बुजुर्गों से सुना और पुस्तकों में पढ़ा होगा जो लीला आपको प्रभावित करती है उसे लिखकर कक्षा में सुनाइए।

उत्तर–बाल श्रीकृष्ण की माखन चुराने की लीला कंस को मारने की लीला हमें प्रभावित करती है।

प्रश्न 3. जिस तरह श्रीकृष्ण बाँसुरी (वाद्य यंत्र) बजाते थे वैसे ही आप भी कोई वाद्य यन्त्र बजाते होंगे आप किस प्रकार का वाद्य यन्त्र बजाना पसन्द करेंगे, कारण सहित अपना अनुभव लिखिए।

उत्तर–छात्र स्वयं लिखें।

प्रश्न 4. पद में सखी के मन में उलझन है कि वह क्या करे और कहाँ जाए ? ऐसे ही हमारे जीवन की अनेक उलझनें हैं जिसे हम किससे कहें। क्या आप के साथ भी ऐसा होता है ? इस विषय में अपने साथियों से चर्चा कर अपने अनुभवों को लिखिए।

उत्तर–हमारे जीवन में भी कई प्रकार की उलझनें आती हैं। तब हम अपने मित्र से या माता-पिता से कहते हैं।

प्रश्न 5. बालक कृष्ण के दही चुराने के पीछे क्या मकसद हो सकता है कक्षा में चर्चा करें।

उत्तर–बालक कृष्ण के दही चुराने का मकसद अपने मित्रों को दही तथा स्वयं भी दही खाने का था।

❑ **भाषा से–**

प्रश्न 1. ब्रज माधुरी पाठ के पद ब्रजभाषा में लिखे गए हैं, ब्रजभाषा के निम्न शब्दों को छत्तीसगढ़ी में क्या कहते हैं, ढूँढ़ कर लिखिए, जैसे सिहात है, काँधे, पाँव, मीत, आजु, लौं, कित, उरहानों, होइगो, प्रातः, सखी, बरजौ, खीजौ, काह।

उत्तर–

ब्रजभाषा के शब्द		छत्तीसगढ़ी के शब्द
सिहात है	=	ईरखा करत हे
काँधे	=	खाँध
पाँव	=	गोड़
मीत	=	मितान
आजु लौं	=	आज ले
कित	=	कती
उरहानौ	=	ठेली
होइगो	=	होही
प्रात	=	बिहनियाँ
सखी	=	संगवारी
बरजौ	=	बरजना
खीजौ	=	खिसियाना
काह	=	काय

प्रश्न 2. चितै-चितै चारों ओर चौंकि-चौंकि त्यौंहि पंक्ति में 'च' वर्ण की आवृत्ति हुई है जो अनुप्रास अलंकार है इस अलंकार के अन्य उदाहरण कविता से ढूँढ कर लिखिए।

उत्तर–(i) जहाँ-तहाँ जब-तब खटकत पात है।

(ii) रोष हू, महेस हू, सुरेस हू, सिहात है।

(iii) बैठत-उठत, सयन-सोवत, निस चलत-फिरत सब ठौर।

(iv) रहिगो मन-ही-मन यो मनसूबा।

प्रश्न 3. कुछ शब्द के दो या दो से अधिक अर्थ होते हैं जो उसके सन्दर्भ के आधार पर अर्थगत भिन्नता रखते हैं जैसे 'भाग' शब्द का अर्थ भागना और हिस्सा है। निम्नलिखित शब्दों के अर्थगत भिन्नता को स्पष्ट करते हुए वाक्य में प्रयोग कीजिए–काल, भीत, जग रोम, मन, मोहन, घनश्याम, आन।

उत्तर–काल–

(i) काम में लगे रहने से काल का पता ही नहीं चलता।

(ii) भूकम्प आया और पूरा गाँव काल के गाल में समा गया।

भीत–

(i) वह ऊँची भीत पर चढ़ गया।

(ii) हिरणों के झुण्ड में एक शेर घुस आया सारे हिरण भय भीत होकर इधर-उधर भागने लगे।

जग–

(i) सारे जग में ईश्वर बसे हैं।

(ii) जग-मग जग-मग दीप जलें।

रोम–

(i) राधा के रोम-रोम में श्रीकृष्ण बसे हैं।

(ii) रोम एक देश का नाम है।

मन–राधा के मन में श्रीकृष्ण है।

मोहन–मोहन नाम का लड़का ग्वाला है।

(ii) कृष्ण का रूप मोहन करने वाला है।

घनश्याम–

(i) बारिश के समय बादल श्याम वर्ण के हो जाते हैं।

(ii) मीरा कहती है घनश्याम के सिवा मेरा कोई नहीं है।

आन–

(i)सभी को अपने आन-मान की चिन्ता रहती है।

(ii) मिता अपने सहेली से आन मिलन को कहती है।

प्रश्न 4. (क) 14 वर्षों की अवधि बीत जाने के बाद राम के न लौटने से लोग ब्याकुल होने लगे।

(ख) तुलसीदास जी ने रामायण की रचना अवधी में की है।

ऊपर के दो उदाहरण से स्पष्ट है कि सुनने में बहुत समान लगने वाले शब्द का अर्थ और प्रयोग की दृष्टि से भिन्नता रखते हैं, जिन्हें हम श्रुतु समभिन्नार्थी शब्दों के रूप में पहचानते हैं। निम्नलिखित ऐसे ही शब्दों का अर्थ ग्रहण करते हुए वाक्य में प्रयोग कीजिए।

कोष-कोस, रीति-रीती, अंश-अंस, दिन-दीन, चिट-चीर, अली-अलि, कूल-कुल।

उत्तर–(1) कोष = खजाना

वाक्य प्रयोग–राजा अकबर का कोष कभी खाली नहीं रहा।

कोस = दूरी बोधक शब्द (1 कोस = 3 किमी.)

वाक्य प्रयोग–रमेश 3 कोस पैदल चलकर गाँव गया।

(2) अंश = हिस्सा

वाक्य प्रयोग–राजकुमार ने अपने अंश का कार्य समाप्त कर लिया है।

अंस = कंधा

वाक्य प्रयोग–मजदूर अपने अंस पर बोझ उठाकर ले जाता है।

(3) दिन = दिवस

वाक्य प्रयोग–रविवार के दिन शासकीय अवकाश रहता हैं

दीन = गरीब–श्रीकृष्ण के मित्र सुदामा अतिदीन थे।

(4) चिर = देर, दीर्घकाल तक रहने वाला,

वाक्य प्रयोग–फिर मोहल्ला अपनी चिर परिचित गति में लौटने लगा था।

चीर = वस्त्र

वाक्य प्रयोग–महाभारत में कौरवों द्वारा द्रोपदी का चीर हरण किया गया था।

(5) अली = सखी–सहेली

वाक्य प्रयोग–कविता की अली नमिता है।

अलि = भौंरा

वाक्य प्रयोग– फूलों पर अलि मंडराते हैं तथा पराग चूसते हैं।

(6) कुल = वंश

वाक्य प्रयोग–रामजी रघुकुल के वंशज थे।

कूल = किनारा

वाक्य प्रयोग–नदी के दोनों कूल कभी नहीं मिल सकते।

प्रश्न 5. दैनिक जीवन में कभी हम हँसते हैं, कभी उदास हो जाते हैं, कभी क्रोधित होते हैं, कभी प्रेम करते हैं तो कभी कृष्ण घृणा करते हैं। और कभी हमें आश्चर्य होता है। ये ही भाव कविताओं में भी प्रकट होते हैं। इन भावों को साहित्य में 'रस' कहा जाता है। निम्नलिखित दस भेद हैं– शृंगार, वीर, रौद्र, हास्य, वीभत्स, अद्‌भुत करुण, शांत, भयानक और वात्सल्य।

पाठ में पंकज कोष.....इस छंद में जीवन की निरर्थकता बताई गई है। अतः यह शाँत रस की रचना है। इसी तरह सखी हम काह करे.. .. इस छन्द में गोपियों का श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम भाव प्रकट हो रहा है। अतः यहाँ शृंगार इस विद्यमान है। उक्त प्रकार के छन्दों के एक-एक अन्य उदाहरण शिक्षक से पूछकर लिखें व समझें ?

उत्तर–1. कहा कैकयी ने सक्रोध, दूर हो अरे निर्बोध। इस पंक्ति में स्थायी भाव क्रोध है। इसलिए रौद्र रस की उत्पत्ति होती है।

2. उधर गरजती सिंधु लहरियाँ, कुटिल काल के गालो सी। चली आ रही फेन उगलती, फन फैलाये व्याली सी।

इसका स्थायी भाव भय है। इससे भय उत्पन्न होता है इसलिए वहाँ भयानक रस होता है।

3. चमक उठी सन् सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी। बुन्देले हर बोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी। खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

इसका स्थायी भाव उत्साह है, जहाँ उत्साह का वर्णन ही वहाँ वीर रस होता है।

4. बिनु पग चले सुनै बिनु काना कर बिनु कर्म करै विधि नाना।

इसका स्थायी भाव आश्चर्य है। यहा अद्‌भुत रस होता है।

5. अभी तो मुकुट बँधा था माथ, हुए अब ही हल्दी के हाथ इसका स्थायी भाव शोक है, किसी के निधन या वियोग का वर्णन होता है वहाँ करुण रस होता है।

6. जशोदा हरिपालने झुलावै।

हलरावै, दुलरावै, मल्हा वै जोइ सोई कछु गावें बच्चों की चेष्टाओं से माता–पिता को हृदय में जिस भाव की उत्पत्ति होती है। उसे वात्सल्य रस कहते हैं।

❑ योग्यता विस्तार

प्रश्न 1. 'चितै-चितै चारों ओर' इस छंद के आधार पर श्री कृष्ण के माखन चोर के रूप का जो भाव आपके मन पर उभरा है उसका अपने शब्दों में चित्रांकन कीजिए।

उत्तर–छात्र स्वयं करें।

प्रश्न 2. श्री कृष्ण की बाल लीलाओं पर आधारित सूर, रसखान, नंददास आदि भक्त कवियों द्वारा रचित रचना को पुस्तकालय से खोजकरपढ़िए।

उत्तर–छात्र स्वयं करें।

प्रश्न 3. ब्रजभाषा के कुछ कवित्त और सवैया छंदों को खोजकर पढ़िए और उनका बाल सभा में सस्वर गायन कीजिए।

उत्तर– कवित्त–

डारि द्रुम पलना बिछौना नव पल्लव के,
सुमन झिंगूला सोहै तन छबि भारी दै।
पवन झुलावै केकी–कीर बतरावै देव
कोकिल हलावै–हुलसावै कर तारी दै॥ –'देव'

सवैया–

मानुष हौं तो वही रसखानि बसौ ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जौ पशु हौं तो कहा बस मेरो चरौ नित नन्द की धेनु मँझारन॥
पाहन हौं तो वही गिरि को जो कियो हरिछत्र पुरन्दर धारन।
जौ खग हौं तो बसेरौ करौ मिलि कालिन्दी फूल कदम्ब की डारन॥
–'रसखान'

❑❑

पाठ 19

कटुक वचन मत बोल

–श्री रामेश्वर दयाल दुबे

सारांश–संसार के सभी प्राणियों में वाणी का वरदान केवल मनुष्य को ही मिला हुआ है। सभी मनुष्य बोलते तो हैं, किन्तु क्या बोलें, कैसे शब्द बोलें, कब बोलें–इस कला में सभी पारंगत नहीं होते। एक बात से प्रेम टपकता है तो दूसरी बात से झगड़ा खड़ा हो जाता है। कड़वी बात ने संसार में न जाने कितने झगड़े पैदा किये हैं। इसलिए सदैव ऐसी वाणी बोलनी चाहिए जो सुनने वाले को प्रिय लगे। इसीलिए सन्तों ने कहा है–**'कुटिल वचन सबसे बुरा, जारि करै तन छार। साधु वचन जलरूप है, बरसै अमृत धार।**

शब्दार्थ–गुलाम = परतन्त्र, **प्रशंसा** = तारीफ, **इम्तहान** = परीक्षा, **कामयाब** = सफल, **जिज्ञासु** = जानने का इच्छुक, **कठोर** = कड़ा, **दीर्घजीवी** = लम्बे समय तक जीवित रहने वाला, **वाणी** = आवाज, **उद्‌घाटित** = खोलती, **कहर ढाना** = अत्याचार करना, **विचलित** = दुःखी, **औषधि** = दवाई, **सालय** = पीड़ा पहुँचाता है, **छार** = राख, **सख्ती** = कड़ाई, **कुदरत** = प्रकृति, **वाक्‌चातुरी** = बोलने की चतुराई, **ऐश्वर्य** = वैभव।

गद्यांशों की व्याख्या

(1) "जीभ कोमल है, दाँत कठोर हैं। जिसमें लचीलापन होता है, जो नम्र होता है, वह अधिक समय तक जीता है, जीवन में जीतता है।"

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य–पुस्तक **'छत्तीसगढ़ भारती'** के पाठ 'कटुक वचन मत बोल' से लिया गया है। इसके लेखक श्री रामेश्वरदयाल दुबे जी हैं।